मेवाड़ का इतिहास

<u>**मेवाड़ के प्राचीन नामः**</u>– मेदपाट, प्राग्वाट, शिविजनपद

- मेवाड़ में गुहिल वंश का शासन था।
- 566 ई. में गुहिल वंश प्रारम्भ हुआ।
- गुहिल वंश की 24 शाखाएँ थी। इनमें मेवाड़ के गुहिल सबसे प्रसिद्ध थे।
- गुहिल वंश विश्व का दीर्घकालीन वंश हैं।
- मेवाड़ के शासकों को हिन्दुआ सुरज कहा जाता था।

बप्पारावलः वास्तविक नाम - काल भोज

गुरु - हारित ऋषि

- हारित ऋषि के आर्शीवाद से 734 ई. में मानमौर्य को हराकर चित्तौड़ जीत लिया।
- नागदा को राजधानी बनाया।
- नागदा में एकलिंगनाथ जी का मन्दिर बनाया।
- मेवाड़ के राजा स्वयं को एकलिंगनाथ जी का दीवान मानते थे।
- इसने मेवाड़ में मुद्रा प्रणाली की शुरुआत की।

अल्लट – आलूरावल

आहड़ को दूसरी राजधानी बनाया।

- आहड़ में वराह मन्दिर का निर्माण करवाया।
- हुण राजकुमारी हरिया देवी से शादी की।
- नौकरशाही की स्थापना की थी।

जैत्रसिंह – (1213-50 ई.)

भूताला का युद्ध– जैत्रसिंह (विजेता) V/s इल्तुतमिश 1234 ई.

- इस युद्ध की जानकारी जयसिंह सूरि की पुस्तक हम्मीर मदमर्दन से मिलती हैं।
- इल्तुतमिश ने नागदा को लूट लिया था। अतः अब जैत्रसिंह ने चित्तौड़ को राजधानी बनाया।

रतनसिंह – (1302-03 ई.)

इसका छोटा भाई कुंभकरण नेपाल चला गया तथा वहाँ गुहिल वंश की राणा शाखा की स्थापना की।

रानी पद्मिनी- सिंहलद्वीप की राजकुमारी

पिता - गन्धर्वसेन, **माता** - चम्पावती, **पति** - रतनसिंह

- राघव चेतन नामक ब्राह्मण ने A.K. को पद्मिनी की सुन्दरता के बारे में बताया।
- A.K. का चित्तौड़ पर आक्रमण- 1303 ई.

V2 Digital Learning Classes

आक्रमण का कारण-

1. साम्राज्य विस्तार नीति
2. व्यापारिक व सामरिक महत्व
3. प्रतिष्ठा का प्रश्न
4. मेवाड़ का बढ़ता हुआ प्रभाव
5. रानी पद्मिनी की सुन्दरता

- ❑ 1303 ई. में चित्तौड़ का प्रथम साका हुआ। साका = बोहर+केसरिया
- ❑ इस साके में गोरा व बादल मारे गए थे।
- ❑ A.K. ने चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया।
- ❑ अपने बेटे खिज्रखाँ को चित्तौड़ सौंप दिया तथा चित्तौड़ का नाम खिज्राबाद कर दिया। बाद में मालदेव सोनगरा को चित्तौड़ सौंप दिया।

मालदेव सोनगरा– मूँछों वाला मालदेव रावल शाखा का अंतिम राजा।

मलिक मुहम्मद जायसी– पद्मावत् अवधी (भाषा) 1540 ई.

हेमरत्न सूरि– गोरा बादल री चौपाई

राणा हम्मीरः– (1326-64 ई.)

सिसोदा गाँव के हम्मीर ने मालदेव के बेटे बनवीर सोनगरा को हराकर चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया।

- ❑ यहाँ से गुहिल वंश की सिसोदिया शाखा का राज प्रारम्भ हुआ।
- ❑ राजाओं के नाम के पहले राणा उपाधि का प्रयोग होने लगा।
- ❑ सिसोदा गाँव की स्थापना राहप ने की। (राजसमंद) इसने चित्तौड़ में बरवड़ी माता (अन्नपूर्णा माता) का मंदिर बनवाया।
- ❑ बरवड़ी माता मेवाड़ के गुहिल वंश की ईष्ट देवी हैं तथा बाण माता गुहिल वंश की कुल देवी हैं।
- ❑ हम्मीर को मेवाड़ का उद्धारक कहा जाता हैं।
- ❑ कुम्भलगढ़ प्रशस्ति में हम्मीर को विषम घाटी पंचानन (कठिन युद्ध में शेर के समान) कहा गया हैं।
- ❑ रसिक प्रिया पुस्तक में कुम्भा ने हम्मीर को वीर राजा कहा।

लाखाः– लक्षसिंह (1382-1421 ई.)

- ❑ जावर में चाँदी की खान प्राप्त हुई।
- ❑ एक बंजारे ने उदयपुर में पिछोला झील का निर्माण करवाया तथा इस झील के पास नटनी का चबूतरा बना हुआ।
- ❑ कुम्भा हाड़ा नकली बूंदी की रक्षा करते हुए मारा गया।

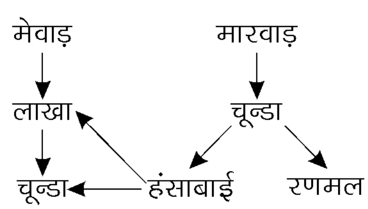

- ❑ मारवाड़ के राजा चून्डा ने अपने बेटी हंसाबाई की शादी मेवाड़ के राणा लाखा से की। इस समय लाखा के बेटे चून्डा ने प्रतिज्ञा की कि मेवाड़ का राजा वह नहीं बनेगा बल्कि हंसाबाई के बेटे को बनायेगा। इसलिए चून्डा को मेवाड़ का भीष्म पितामह कहा जाता हैं।

V2 Digital Learning Classes

- इस बलिदान के बदले में चून्डा को कई विशेषाधिकार दिए गए-
  1. मेवाड़ के कुल 16 प्रथम श्रेणी ठिकानों में से 4 चून्डा को दे दिए गए। इनमें सबसे बड़ा ठिकाना सलूम्बर (उदयपुर) भी शामिल था।
  2. सलूम्बर का सामन्त मेवाड़ के राणा का राजतिलक करेगा।
  3. सलूम्बर का सामन्त हमेशा हरावल में रहेगा।
  4. मेवाड़ के सभी कागज-पत्रों पर राणा के साथ-साथ सलूम्बर का सामन्त भी हस्ताक्षर करता था।
  5. राणा के राजधानी में नहीं होने पर सलूम्बर का सामन्त राजधानी संभालता था।

मोकलः– (1421-33 ई.)

मोकल हंसाबाई का बेटा था।

- मोकल का संरक्षक चून्डा था।
- हंसाबाई के अविश्वास के कारण चून्डा मालवा होशंगशाह के पास चला गया।
- अब हंसाबाई ने अपने भाई रणमल को मोकल का संरक्षक बनाया।
- मोकल ने एकलिंग मन्दिर का परकोटा बनवाया।
- चित्तौड़ में समिद्धेश्वर मन्दिर का पुर्ननिर्माण करवाया।
- यह मन्दिर वास्तव में भोज परमार द्वारा बनाया गया त्रिभुवन नारायण मन्दिर था।
- 1433 ई. में चाचा, मेरा, महपा पंवार ने मोकल की हत्या जीलवाड़ा राजसमंद नामक स्थान पर की।

कुम्भाः– (1433-68 ई.)

माता- सौभाग्यवती परमार

- रणमल कुम्भा का संरक्षक बना।
- रणमल की सहायता से कुम्भा ने अपने पिता की हत्या का बदला लिया।
- रणमल ने सिसोदियों का नेता राघवदेव (चून्डा का भाई) की हत्या करवा दी, इससे मेवाड़ दरबार में राठौड़ों का प्रभाव बढ़ गया।
- हंसाबाई ने मालवा से चून्डा को वापस बुलाया।
- रणमल को उसकी प्रेमिका भारमली की सहायता से मार दिया।
- रणमल का बेटा जोधा ने अपने भाईयों के साथ बीकानेर के पास कावनी/फाहूनी गांव में शरण ली।
- चून्डा ने मण्डोर पर अधिकार कर लिया।
- 1453 ई. में कुम्भा व जोधा के मध्य आंवल-बांवल की सन्धि हुई। इस सन्धि के द्वारा जोधा को मण्डोर वापस दिया गया।

  सारंगपुर का युद्ध 1437 ई. में कुम्भा एवं महमूद खिलजी (मालवा) के बीच हुआ।

  कारण- महमूद खिलजी ने कुम्भा के पिता के हत्यारों को शरण दी थी जिसमें कुम्भा विजयी हुआ। इस जीत की याद में चित्तौड़ में विजय स्तम्भ बनवाया।

विजय स्तम्भः– कीर्ति स्तम्भ, विष्णु ध्वज, गरुड़ ध्वज, भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष, मूर्तियों का अजायबघर

- 9 मंजिला इमारत हैं जो 122 फीट लम्बी, 30 फीट चौड़ी है। वास्तुकार- जेवा, पूंजा, पोमा, नापा
- तीसरी मंजिल में अरबी भाषा में 9 बार अल्लाह लिखा हुआ है।
- कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति के लेखक- अत्रि व महेश
- राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं राजस्थान पुलिस का प्रतीक चिह्न है।

V2 Digital Learning Classes

- राजस्थान की पहली इमारत जिस पर डाक टिकट जारी किया गया।
- महाराणा स्वरूप सिंह ने इसका पुर्ननिर्माण करवाया।
- जेम्स टॉड ने इसकी तुलना कुतुबमीनार से की।
- फर्ग्यूसन ने इसकी तुलना रोम के टार्जन टॉवर से की।

जैन कीर्ति स्तम्भः–

- चित्तौड़ के किले में सात मंजिला इमारत जो 12वीं शताब्दी में जीजाशाह बघेरवाला द्वारा बनाई गई।
- ये भगवान आदिनाथ को समर्पित हैं अतः इसे आदिनाथ स्मारक भी कहा जाता हैं।

चाम्पानेर की संधि–1456 ई.

महमूद खिलजी (मालवा) + कुतुबद्दीन शाह (गुजरात)

- 1457 ई. में बदनौर के युद्ध में कुम्भा ने इन दोनों को एक साथ हराया।
- कुम्भा ने सिरोही के राजा सहसमल देवड़ा को हराया।

नागौर

↙ ↘

शम्स खाँ मुजाहिद खाँ

- कुम्भा ने शम्स खाँ की सहायता की तथा मुजाहिद खाँ को हराया।
- **कुम्भा की सांस्कृतिक उपलब्धियाँः-**
- **स्थापत्य कला**- वीर विनोद के लेखक श्यामलदास के अनुसार कुम्भा मेवाड़ के 84 में से 32 किलों का निर्माता था।
- **कुम्भलगढ़– राजसमंद**
- **वास्तुकार**- मण्डन
- इसे मेवाड-मारवाड़ का **सीमा प्रहरी** कहा जाता हैं।
- कुम्भलगढ़ का सबसे ऊँचा स्थान **कटारगढ़** है जो कुम्भा का निजी आवास था, इसे मेवाड़ की आँख कहा जाता हैं।
- **अचलगढ़**– सिरोही का पुर्ननिर्माण करवाया।
- **बसन्ती दुर्ग**– सिरोही
- **मचान दुर्ग**– सिरोही
- **भोमट दुर्ग**– भील जनजाति को नियंत्रित करने के लिए।
- चित्तौड़गढ़, अचलगढ़, कुम्भलगढ़ में कुम्भ स्वामी के मन्दिर बनवाए।
- **रणकपुर जैन मन्दिरः**– कुम्भा के समय 1439 ई. में धरणकशाह ने निर्माण करवाया था। इनमें सबसे महत्वपूर्ण चौमुखा मन्दिर हैं जिसका वास्तुकार देपाक था।
- इस मन्दिर में 1444 स्तम्भ हैं, इसलिए इसे स्तम्भों का अजायबघर कहा जाता हैं।
- यह आदिनाथ को समर्पित हैं।
- **कुम्भा की पुस्तकेंः**– संगीत गुरु- सारंग व्यास। कुम्भा एक अच्छा संगीतज्ञ था जिसने संगीत पर अनेक पुस्तकें लिखी।

1. सुधा प्रबन्ध (सूड प्रबन्ध)
2. कामराज रतिसार
3. संगीत सुधा

Digital Learning Classes

4. संगीत मीमांसा
5. संगीत राज- अ. पाठ्य रत्न कोष
   ब. गीत रत्न कोष
   स. नृत्य रत्न कोष
   द. वाद्य रत्न कोष
   य. रस रत्न कोष
6. जयदेव की **गीत गोविन्द** पर कुम्भा ने **रसिक प्रिया** टीका लिखी।

संगीत रत्नाकर एवं **चण्डी शतक** पर टीका लिखी।

- **कुम्भा के दरबारी विद्वानः–**
  1. कान्हा व्यास– एकलिंग महात्म्यः इसका पहला भाग कुम्भा ने लिखा, जिसे राजवर्णन कहा जाता हैं।
  2. मण्डन– अ. वास्तुसार, ब. देवमूर्ति प्रकरण, स. राजवल्लभ, द. रूप मण्डन- मूर्तिकला, य. कोदण्ड मण्डन- धनुषकला
  3. नाथा- वास्तुमंजरी (मण्डन का भाई)
  4. गोविन्द- कलानिधि, द्वार दीपिका, उद्धार धोरिणी (मण्डन का बेटा)
  5. रमाबाई- ये कुम्भा की बेटी थी जो संगीतज्ञा थी। उपाधि- वागीश्वरी
     रमाबाई को जावर क्षेत्र दिया गया था।
- **कुम्भा की उपाधियाँ:-**
  1. हिन्दु सुरताण
  2. अभिनव भरताचार्य- संगीतकार
  3. राणौ रासो- साहित्यकारों का आश्रयदाता
  4. हाल गुरु- पहाड़ी किले जीतने वाला
  5. चाप गुरु- धनुर्धर
- कुम्भा के बेटे उदा ने कुम्भलगढ़ के किले में कुम्भा की हत्या कर दी।

राणा सांगा (1509-28 ई.)

पृथ्वीराज- रायमल का सबसे बड़ा बेटा व सांगा का भाई था।

- इसे उडणा राजकुमार कहा जाता हैं। अपनी रानी तारा के नाम पर अजमेर किले का नाम बदल कर तारागढ़ कर दिया।
- कुम्भलगढ़ के किले में इसके 12 खम्भों की छतरी बनी हुई हैं।

जयमल- सांगा का बड़ा भाई था। सोलंकियों के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया।

- अपने भाइयों के साथ लड़ाई होने पर सांगा ने श्रीनगर (अजमेर) के कर्मचन्द पंवार के पास शरण ली।
- दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी को दो युद्धों में हराया-
  1. खातोली (1517)- कोटा
  2. बाडी (1519)- धौलपुर
- मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी द्वितीय को गागरौण (झालावाड़) के युद्ध 1519 ई में हराया।
- इस समय चन्देरी का किला सांगा के मित्र मेदिनीराय के पास था।

V2 Digital Learning Classes

ईडर (गुजरात रियासत)

रायमल → सांगा

भारमल → मुजफ्फरशाह (गुजरात)

- बयाना का युद्ध (भरतपुर) 16 फरवरी, 1527 ई में सांगा ने बाबर को हराया।
- खानवा का युद्ध (भरतपुर) 17 मार्च, 1527 को सांगा एवं बाबर के बीच हुआ।
- इस युद्ध के पहले जिहाद की घोषणा की।
- शराब नहीं पीने की कसम खाई।
- मुस्लिम व्यापारियों से लिया जाने वाला तमगा कर माफ कर दिया।
- सांगा ने राजस्थान के सभी राजाओं को लड़ने के लिए बुलाया।

आमेर	-	पृथ्वीराज
जोधपुर	-	मालदेव (गांगा)
बीकानेर	-	कल्याणमल (जैतसी)
सिरोही	-	अखेराज देवड़ा
चन्देरी	-	मेदिनीराय
मेवात	-	हसन खाँ मेवाती

- महमूद लोदी - इब्राहीम लोदी का छोटा भाई
- बाबर युद्ध में जीत गया तथा सांगा घायल हो गया।
- बसवा (दौसा) - घायल सांगा को यहां लाया गया।
- ईरिच (म.प्र.)- साथियों द्वारा सांगा को जहर दे दिया गया।
- कालपी (म.प्र.)- यहाँ पर सांगा की मृत्यु हो गई।
- माण्डलगढ़ (भीलवाड़ा)- सांगा की छतरी।
- सांगा के घायल होने पर झाला अज्जा ने नेतृत्व किया।
- **सांगा की उपलब्धियाँः-**
  1. हिन्दुपत
  2. सैनिकों का भग्नावशेष (घायल सैनिक)
- **खानवा में सांगा की हार के कारणः-**
  1. सेना में एकता का अभाव था। सेना अलग-अलग सेनापति के नेतृत्व में लड़ रही थी।
  2. सांगा ने बाबर को युद्ध के लिए समय दे दिया था।
  3. सांगा युद्धभूमि में स्वयं उतर गया था।
  4. बाबर का तोपखाना तथा तुलगुमा युद्धपद्धति
  5. हिन्दु राजा हाथियों का प्रयोग करते थे जबकि मुगल घोड़ों का प्रयोग करते थे।
  6. मुगल हल्के हथियारों से लड़ते थे जबकि हिन्दु राजा भारी हथियारों से।

V2 Digital Learning Classes

7. रायसीन (म.प्र.)- सलहदी तंवर तथा नागौर के खानजादे मुस्लिम युद्ध के बीच में बाबर से मिल गये थे।

भारत के इतिहास में खानवा के युद्ध का महत्वः–

- अफगान तथा राजपूतों को हराने के बाद बाबर के लिए भारत पर राज करना आसान हो गया था।
- खानवा अन्तिम युद्ध था जिसमें राजपूत एकजुट होकर लड़े थे।
- सांगा के बाद कोई भी राजपूत राजा दिल्ली को चुनौती नहीं दे पाया।
- राजपूतों की सामरिक कमजोरियाँ उजागर हो गई।
- सांगा के बाद कोई बड़ा हिन्दु राजा नहीं बचा, इससे हिन्दु संस्कृति को नुकसान पहुँचा।
- इस युद्ध के बाद मुगलों की राजपूतों के प्रति भविष्य की नीति निर्धारित हो गई तथा अकबर ने टकराव के स्थान पर राजपूतों से मित्रता की।

विक्रमादित्य (1531-36 ई.)

- इसकी माता कर्मावती इसकी संरक्षिका बनती हैं।
- 1533 ई. में गुजरात के बहादुर शाह ने आक्रमण किया। रानी कर्मावती ने रणथम्भौर का किला देकर संधि कर ली।
- 1534 ई. में बहादुर शाह ने पुनः आक्रमण किया। कर्मावती ने मुगल बादशाह हुँमायू को राखी भेजकर सहायता माँगी।
- इस समय चित्तौड़ का दूसरा साका हुआ। रानी कर्मावती ने जौहर किया। देवलिया (प्रतापगढ़) के बाघसिंह के नेतृत्व में केसरिया किया गया।
- उडणा राजकुमार पृथ्वीराज के दासी पुत्र बनवीर को मेवाड़ का शासन सौंप दिया गया।
- बनवीर ने विक्रमादित्य को मार दिया परन्तु पन्नाधाय ने अपने बेटे चन्दन की बलि देकर उदयसिंह को बचा लिया।
- कुम्भलगढ़ के आशा देवपुरा ने पन्नाधाय व उदयसिंह को शरण दी।

उदयसिंह (1537-72 ई.)

- 1540 ई. में मावली (उदयपुर) के युद्ध में बनवीर को हराकर राजा बना।
- 1559 ई. में उदयपुर की स्थापना तथा उदयसागर झील बनाई।
- 1567-68 ई. में अकबर का चित्तौड़ पर आक्रमण उदयसिंह जयमल व फत्ता को चित्तौड़ का किला सौंपकर गिर्वा की पहाड़ियों में चला गया।
- इस समय चित्तौड़ का तीसरा साका हुआ।
- जयमल अकबर की संग्राम नामक बन्दूक की गोल से घायल हो गया था। अतः उसने कल्ला राठौड़ के कंधों पर बैठकर युद्ध किया।
- कल्ला राठौड़ को चार हाथ वला देवता कहा जाता हैं।
- अकबर ने चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया तथा 30,000 लोगों का कत्ल करवाया।
- अकबर ने जयमल व फत्ता की मूर्तियाँ आगरा के किले में लगवाई। बीकानेर के जूनागढ़ के किले में इनकी मूर्तियाँ है।
- 1572 ई. में उदयसिंह की छतरी गोगुन्दा में बनी हुई हैं।

महाराणा प्रताप (1572-97 ई.)

- जन्म- 9 मई 1540 ई. को कुम्भलगढ़ के किले में हुआ।
- माता- जयवन्ता बाई सोनगरा
- बचपन का नाम- कीका

Digital Learning Classes

- उदयसिंह ने प्रताप के छोटे भाई जगमाल को राजा बनाया परन्तु मेवाड़ के सामन्तों ने प्रताप को राजा बना दिया।
- प्रताप का पहला राजतिलक गोगुन्दा में हुआ था। प्रताप ने कुम्भलगढ़ के किले में विधिवत् राजतिलक करवाया।
- प्रताप को समझाने के लिए अकबर द्वारा भेजे गए दूतः-

  1. जलाल खाँ कोरची 2. मानसिंह 3. भगवन्तदास 4. टोडरमल

हल्दीघाटी का युद्ध (18 जून, 1576)

- अकबर के सेनापति 1. मानसिंह एवं 2. आसफ खाँ
- मिहतर खाँ नामक मुगल सैनिक ने अकबर के आने की अफवाह फैलाई थी।
- चेतक के घायल हो जाने के कारण प्रताप युद्ध भूमि से बाहर चला गया तथा झाला मान (बिदा) ने युद्ध का नेतृत्व किया। प्रताप हार गया था लेकिन मानसिंह उसे अकबर की अधीनता स्वीकार कराने में असफल रहा।
- प्रताप की तरफ से हाकिम खाँ सूर तथा पूजा भील लड़े थे।
- बलीचा में चेतक की छतरी बनी हुई हैं।

अबुल फज्जल	-	खमनौर का युद्ध
बदायुंनी	-	गोगुन्दा का युद्ध (युद्ध में उपस्थित)
जेम्स टॉड	-	मेवाड़ की थर्मोपोली
आदर्शी लाल श्रीवास्तव	-	बादशाह बाग का युद्ध

हल्दीघाटी युद्ध का महत्वः-

- हल्दीघाटी का युद्ध साम्राज्यवादी शक्ति के खिलाफ प्रादेशिक स्वतन्त्रता का युद्ध था।
- इस युद्ध में भौतिक विजय अकबर की हुई लेकिन नैतिक विजय प्रताप की हुई।
- अपने कम संसाधनों के बावजूद प्रताप अकबर से लड़ा इससे लोगों में आशा व नैतिकता का संचार हुआ।
- प्रताप आदिवासी जनजातियों तथा स्थानीय लोगों को साथ लेकर लड़ा इससे लोगों में राष्ट्रीयता का भावना का विकास हुआ। कालान्तर में हमारे स्वतन्त्रता सेनानियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन गया।
- हल्दीघाटी युद्ध के बाद प्रताप की आर्थिक स्थिति खराब होने पर चूलिया नामक (पाली) गांव में भामाशाह व ताराचन्द ने (भाई) अपनी सारी सम्पत्ति प्रताप को दे दी।

Digital Learning Classes

कुम्भलगढ़ का युद्ध (1577/78/79 ई.)

- अकबर के सेनापति शाहबाज खान ने कुम्भलगढ़ पर तीन बार आक्रमण किया।
- 1580 ई. में शेरपुर नामक स्थान से अमरसिंह मुगल सेनापति रहिम/रहीमजी की बेगमों को ले आया था लेकिन प्रताप ने उन्हें ससम्मान वापस पहुँचाया था।

दिवेर का युद्ध (1582 ई.)- राजसमन्द

- प्रताप ने अकबर के सेनापति सुल्तान खान को मारकर युद्ध जीत लिया।

  जेम्स टॉड- मेवाड़ का मैराथन
- 1585 ई. के खिलाफ अकबर का अन्तिम सेनापति जगन्नाथ कछवाहा आया था। (भगवन्तदास का भाई) तत्पश्चात् प्रताप ने अपनी राजधानी चावण्ड (उदयपुर) बनाई। चावण्ड से ही मेवाड़ की चित्रकला का स्वतन्त्र विकास प्रारम्भ हुआ।

  मुख्य चित्रकार- नसीरुद्दीन
- चावण्ड में चामुण्डा माता का मन्दिर बनवाया।

- 19 जनवरी, 1597 ई में चावण्ड में प्रताप की मृत्यु हुई।
- बाडोली में प्रताप की छतरी हैं।
- प्रताप ने चित्तौड़गढ़ व माण्डलगढ़ को छोड़कर शेष मेवाड़ जीत लिया।

अमरसिंह प्रथम

- मुगल मेवाड़ संधि- 1615 ई. अमरसिंह व जहाँगीर के बीच
- मेवाड़ की तरफ से संधि का प्रस्ताव लेकर शुभकरण व हरिदास लेकर गये थे।
- **संधि की शर्तेः-**
  1. मेवाड़ का राजा मुगल दरबार में नहीं जायेगा। बल्कि उसके स्थान पर युवराज मुगल दरबार में जायेगा।
  2. मेवाड़ मुगलों को एक हजार घुड़सवारों की सहायता देगा।
  3. चित्तौड़ का किला मेवाड़ को दे दिया जायेगा तथा उसका पुर्ननिर्माण/मरम्मत नहीं करवा सकते।
  4. मेवाड़ से वैवाहिक संबंध नहीं बनाए जायेगें।
- **संधि का महत्वः-**
  1. संधि होने से शांति व्यवस्था सुनिश्चित हुई जिससे कलात्मक गतिविधियों को बढ़ावा मिला।
  2. सांगा तथा प्रताप के समय से चली आ रही स्वतन्त्रता की भावना को आघात लगा।
- इस संधि के तहत मेवाड़ का युवराज कर्णसिंह मुगल दरबार में गया तथा जहाँगीर ने उसे 5000 का मनसबदार बनाया। जहाँगीर ने अमरसिंह व कर्णसिंह की मूर्तियाँ आगरा के किले में लगवाई।
- कर्णसिंह ने जग मन्दिर महलों का निर्माण शुरु करवाया था। शाहजहाँ विद्रोह के दौरान इन महलों में रुका था।

जगतसिंह प्रथम

- जगमन्दिर महलों का निर्माण पूरा करवाया।
- उदयपुर में जगदीश मन्दिर का निर्माण करवाया। इसे सपने बना मन्दिर कहते हैं। (जगन्नाथ) जगन्नाथ राय प्रशस्ति के लेखक कृष्णभट्ट हैं।

राजसिंह (1652-80 ई.)

- चित्तौड़ के किले की मरम्मत शुरु करवा दी थी। उत्तराधिकार संघर्ष में औरंगजेब करा समर्थन किया था।
- इसने औरंगजेब के जजिया कर का विरोध किया था। औरंगजेब के खिलाफ जोधपुर के अजीतसिंह को समर्थन दिया। इसे राठौड़-सिसोदिया गठबंधन कहा जाता है।
- औरंगजेब से हिन्दु मूर्तियों की रक्षा की थी।
- रूपनगढ़ की राजकुमारी चारुमती की औरंगजेब से रक्षा की थी।

  सहल कंवर
- सलूम्बर के रतनसिंह चूडावत की हाड़ी रानी जिसने पति के निशानी माँगने पर अपना सिर काट कर दे दिया था।
- **राजसिंह की सांस्कृतिक गतिविधियाँः-**

  3 मन्दिर—
  1. श्रीनाथ मन्दिर- नाथद्वारा (सिहाड़)
  2. द्वारिकाधीश- कांकरोली
  3. अम्बा माता मन्दिर- उदयपुर

V2 Digital Learning Classes

3 विद्वान–

1. रणछोड़ भट्ट तैलंग- राज प्रशस्ति, अमर काव्य वंशावली
2. किशोर दास- राजप्रकाश
3. सदाशिव भट्ट- राज रत्नाकर

1 झील– राजसमन्द झील (राज प्रशस्ति)

राज प्रशस्तिः– ये 25 बड़े पत्थरों पर लिखा गया संस्कृत का सबसे बड़ा शिलालेख।

राजसमन्द झील का निर्माण अकाल राहत कार्यों में करवाया गया था। राजसमन्द झील का निर्माण 1662-76 ई के दौरान हुआ था। इससे मुगल मेवाड़ संधि की जानकारी मिलती है।

- **राजसिंह की उपाधियाँः–** विजयकटकातु कटक-सेना
  हाइड्रोलिक रूलर

अमरसिंह द्वितीय

- देबारी समझौता- 1708 ई.
- अमरसिंह द्वितीय- मेवाड़
- सवाई जयसिंह- आमेर
- अजीतसिंह- मारवाड़
- मुगल बादशाह बहादुर शाह के खिलाफ समझौता हुआ। इस समझौते के तहत सवाई जयसिंह व अजीतसिंह को उनके राज्य दिलाने में मदद की जायेगी।
- अमरसिंह द्वितीय की बेटी चन्द्रकंवर की शादी सवाई जयसिंह के साथ की गई तथा शर्त रखी गई कि चन्द्रकंवर के बेटे को आमेर का अगला राजा बनाया जायेगा।

संग्रामसिंह द्वितीय

- उदयपुर में सहेलियों की बाड़ी का निर्माण करवाया।
- सीसारमा में वैद्यनाथ मन्दिर बनवाया।
- वैद्यनाथ प्रशस्ति का लेखक रुपभट्ट ने हुरड़ा सम्मेलन की रुपरेखा तैयार की थी।

जगतसिंह द्वितीय

- हुरडा सम्मेलन 17 जुलाई, 1734 ई को भीलवाड़ा में हुआ।
- उद्देश्यः- सभी राजपूतों को मराठों के खिलाफ एकजुट करना।
- **अध्यक्षः–**

जगतसिंह द्वितीय	-	मेवाड़
सवाई जयसिंह	-	जयपुर
अभयसिंह	-	मारवाड़
बख्तसिंह	-	नागौर
जोरावरसिंह	-	बीकानेर
दलेल सिंह	-	बूँदी
दुर्जनसाल	-	कोटा

Digital Learning Classes

राजसिंह - किशनगढ़

गोपाललाल - करौली

- वर्षा ऋतु समाप्त होने के बाद रामपुरा में मराठों के खिलाफ लड़ाई की जायेगी।
- **हुरड़ा सम्मेलन का महत्वः-** खानवा के बाद राजपूतों ने किसी दूसरी शक्ति के खिलाफ एकजुट होने की कोशिश की। आपसी मतभेदों की वजह से हुरड़ा सम्मेलन असफल रहा।

भीमसिंह

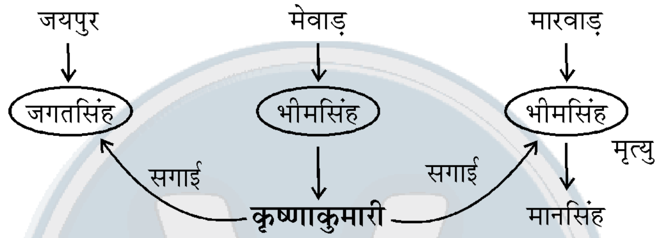

- **गिंगोली का युद्ध/परबतसर का युद्ध (1807 ई.)-** जगतसिंह एवं मानसिंह के बीच। अमीर खाँ पिण्डारी (टोंक) व अजीतसिंह के कहने पर कृष्णाकुमारी को जहर देकर हत्या कर दी।

Digital Learning Classes

मारवाड़ का इतिहास

- मारवाड़ में राठौड़ वंश का शासन था। राठौड़ों को दक्षिण भारत का राष्ट्रकूट था। कन्नौज के गहड़वाल बताया जाता था।

रावसिंहा बदायूं (उ.प्र.)

- 1243 ई. में पालीवाल ब्राह्मणों की सहायता के लिए मारवाड़ आया था।
- राजधानी- खेड बालोतरा (बाड़मेर)
- बिठू में इसकी छतरी बनी हुई हैं।
- इसे राजस्थान के राठौड़ों का आदिपुरुष कहा जाता हैं।

राव धूहड़

- अपनी कुलदेवी नागणेची माता की मूर्ति कर्नाटक से लेकर आया तथा बाड़मेर के नागाणा गाँव में स्थापित करवाया।

मल्लीनाथ जी

- राजधानी- मेवानगर (बाड़मेर)
- ये राजसथान के एक लोक देवता हैं। इनके कारण बाड़मेर क्षेत्र का नाम मालाणी पड़ा।
- गणगौर पर गिंदोली (गींदोली) का गीत गाया जाता है।

राव चून्डा

- प्रतिहार (इन्दा) शासकों ने अपनी राजकुमारी की शादी चून्डा से की तथा मण्डोर दहेज में दिया। अतः अब मण्डौर राठौड़ों की राजधानी बन गया।

राव जोधा

- 1459 ई. में जोधपुर की स्थापना की। जोधपुर में मेहरानगढ़ किला बनवाया। मेहरानगढ़ किले की नींव कर्णीमाता ने लगाई थी। जोधा के पांचवे बेटे बीका ने बीकानेर की स्थापना की।

मालदेव (1531-62 ई.)

- अपने पिता गांगा की हत्या करके राजा बना। राजतिलक के समय इसके पास दो परगने थे- 1. जोधपुर एवं 2. सोजत
- मालदेव ने 52 युद्ध तथा 58 परगने जीते थे।
- पाहेबा का युद्ध/साहेबा का युद्ध (1541 ई.)- मालदेव एवं जैतसी (बीकानेर) के बीच हुआ जिसमें मालदेव जीत गया एवं जैतसी लड़ता हुआ मारा गया।
- **मालदेव-हुमायूँ सम्बन्धः–** शेरशाह सूरी से हार कर जब हुमायूँ राजस्थान से होकर निकल रहा था। तब उसने जोगीतीर्थ नामक स्थान से मालदेव से सहायता प्राप्त करने के लिए अपना दूत मण्डल भेजा। 1. मीर समंद, 2. अतका खां, 3. रायमल सोनी

  मालदेव ने सकारात्मक उत्तर दिया तथा बीकानेर देने का वादा किया परन्तु अपने पुस्तकालय अध्यक्ष मुल्ला सूर्ख के कहने पर हुमायूं मालदेव पर विश्वास नहीं करता तथा अमरकोठ के राजा वीरसाल सोढ़ा के पास शरण लेता हैं।

  यदि उस समय मालदेव तथा हुमायूँ ने समझदारी दिखाई होती तो शेरशाह सूरी के खिलाफ मुगल राजपूत गठबंधन शुरु हो जाता तथा अफगान सत्ता भारत से समाप्त हो जाती। जो मुगल-राजपूत संबंध अकबर से बनने प्रारम्भ हुए थे वे इसी समय शुरु हो जाते।

- गिरी सुमैल का युद्ध जैतारण का युद्ध जनवरी 1544 ई. में

मालदेव	एवं	शेरशाह सूरि
जैता		कल्याणमल (बीकानेर)
कूंपा		वीरमदेव (मेड़ता)

शेरशाह की चालाकी की वजह से मालदेव पीछे हट गया। मालदेव के दो सेनापति जैता व कुम्पा ने शेरशाह से लड़ाई की। जलाल खाँ जलवानी की आरक्षित टुकड़ी की सहायता से शेरशाह बहुत मुश्किल से जीता तथा जीतने के बाद कहा था- 'मैं मुट्ठी भर बाजारे की खातिर हिन्दुस्तान की बादशाहत खा देता'।

- शेरशाह सूरी ने जोधपुर पर अधिकार कर लिया तथा मालदेव सीवाणा चला गया।
- सिवाणा को मारवाड़ के राठौड़ों की शरणस्थली कहा जाता हैं।
- शेरशाह ने खवास खाँ को जोधपुर सौंपा तथा वापस चला गया। मालदेव ने जोधपुर पर पुनः अधिकार कर लिया।
- यदि मालदेव ने बीकानेर व मेड़ता के राज्य नहीं छिने होते तो वह शेरशाह के विरूद्ध राठौड़ों का गठबंधन बना सकता था। इसी प्रकार यदि शेरशाह की चालाकी को मालदेव समझ जाता तो वह गिरी/सुमैल युद्ध को जीत सकता था।
- मालदेव ने जोधपुर किले की चारदीवारी करवाई थी। मालदेव ने चार किले बनवाए थे- पोकरण (जैसलमेर), मेड़ता (नागौर), सोजत (पाली) एवं रींया (नागौर)।
- मालदेव की रानी उमादे (देवी) को रूठी रानी कहा जाता हैं जो भारमली नामक दासी की वजह से नाराज हो गई थी।
- उमादे ने अपना कुछ समय अजमेर के तारागढ़ किले में बिताया था।
- **मालदेव के दरबारी विद्वानः-**

  ईसरदास- आला झाला री कुण्डलिया (सूर सतसई), देवीयाण, हरिरस

  आशानन्द- उमादे भटियाणी रा कवित, बाधा भारमली रा दूहा
- **मालदेव की उपाधियाँः-** 1. हिन्दु बादशाह, 2. हशमत वाला राजा (वैभवशाली राजा)

चन्द्रसेन

- मालदेव ने अपने बड़े बेटों राम व उदयसिंह को राजा नहीं बनाया बल्कि छोटे बेटे चन्द्रसेन को राजा बना दिया।
- राम अकबर के पास चला गया। अकबर ने राम की सहायता के लिए सेना जोधपुर भेजी तो चन्द्रसेन भाद्राजुण चला गया।
- **अकबर का नागौर दरबार (1570 ई.)ः–** अकबर ने अकाल राहत कार्यों के बहाने से नागौर दरबार लगाया लेकिन उसका वास्तविक उद्देश्य राजपूत राजाओं को अपनी अधीनता स्वीकार करवाना था। कल्यामल (बीकानेर), हरराज (जैसलमेर) तथा चन्द्रसेन का बड़ा भाई मोटा राजा उदयसिंह अधीनता स्वीकार कर लेते हैं। चन्द्रसेन भी इस दरबार में गया था लेकिन अकबर का झुकाव मोटा राजा उदयसिंह की तरफ देखकर अकबर से मिले बिना ही चले गया था।
- **नागौर दरबार का महत्वः–**
  1. अकबर ने बिना लड़े ही अपनी कूटनीति से राजस्थान के राजाओं से अधीनता स्वीकार करवा ली।
  2. राजस्थान के राजा मुगल विरोधी व मुगल सहयोगी के रूप में स्पष्ट रूप से बंट गये थे।
  3. अब प्रताप व चन्द्रसेन को छोड़कर मुगल आश्रित राजाओं की श्रृंखला प्रारम्भ हुई।
  4. नागौर दरबार में हुई संधियों के कारण राजस्थान में शांति व्यवस्था सुनिश्चित हुई जिससे कलात्मक गतिविधियों को बढ़ावा मिला।
- अकबर ने भाद्राजुण (जालौर) में सेना भेज दी तो चन्द्रसेन सिवाणा चला गया, इसके बाद वह पूरी जिन्दगी भटकता रहा लेकिन उसने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की। अन्त में 1581 ई. में सारण की पहाड़ियों में सिंचियाई गांव (पाली) में उसकी मृत्यु हो गई।

- इसे मारवाड़ का प्रताप, प्रताप का अग्रगामी तथा मारवाड़ का भूला-बिसरा राजा कहा जाता हैं।
- 1572-74 ई. तक बीकानेर के रायसिंह को अकबर ने जोधपुर का शासक नियुक्त किया गया था।
- **प्रताप व चन्द्रसेन में समानताएँः–**
  1. दोनों ने अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की थी।
  2. दोनों को ही अपने भाईयों के विरोध का सामना करना पड़ा।
  3. दोनों ने ही छापामार युद्ध प्रणाली से युद्ध लड़ा।
  4. दोनों के ही ज्यादातर राज्य पर अकबर ने अधिकार कर लिया था। केवल अपनी थोड़ी सी जमीन के बल पर अकबर से लड़ाई लड़ते रहे।
  5. दोनों को ही अपने राज्य के बाहर शरण लेनी पड़ी। प्रताप छप्पन के मैदान (बाँसवाड़ा) में तथा चन्द्रसेन ने डूँगरपुर के राजा आसकरण के पास शरण ली।
- **प्रताप व चन्द्रसेन में असमानताएँः–**
  1. प्रताप ने जहाँ हल्दीघाटी के मैदान में आमने-सामने की लड़ाई लड़ी वहीं चन्द्रसेन कभी ऐसी हिम्मत नहीं कर पाया।
  2. प्रताप का मुगल विरोध राजतिलक के साथ ही शुरु हो गया था जबकि चन्द्रसेन का नागौर दरबार के बाद।
  3. प्रताप का मुगल विरोध उसकी मृत्यु के बाद भी जारी रहा जबकि चन्द्रसेन का मुगल विरोध उसकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गया।
  4. प्रताप ने चावण्ड को सत्ता का केन्द्र बनाया जबकि चन्द्रसेन सत्ता का केन्द्र स्थापित नहीं कर पाया।
  5. प्रताप स्थानीय लोगों तथा आदिवासी जनजातियों को अपने साथ जोड़ लेता हैं, जबकि चन्द्रसेन कभी ऐसा नहीं कर पाया।
  6. प्रताप की तुलना में चन्द्रसेन की परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं थी, क्योंकि मेवाड़ जहाँ एक पर्वतीय भू-भाग था वहीं मारवाड़ एक सपाट मरुस्थल था।
  7. प्रताप की तुलना में चन्द्रसेन के पास संसाधनों की कमी थी क्योंकि उसे भामाशाह जैसे साथी नहीं मिले।

मोटा राजा उदयसिंह

- मुगलों की अधीनता स्वीकार करने वाला मारवाड़ का पहला राजा।
- अपनी बेटी मानीबाई/जोधाबाई/जगत गोसाई की शादी सलीम (जहाँगीर) के साथ हुई। खुर्रम (शाहजहाँ) इसी का बेटा था।
- **कला रायमलोतः**- मोटा राजा उदयसिंह के भाई रायमल का बेटा तथा सीवाणा का सामन्त था। इसने 1590 ई. में अकबर के खिलाफ सीवाणा का दूसरा साका किया था।
- पृथ्वीराज राठौड ने इसकी मृत्यु से पहले इसके **मरसिये** लिखे थे।

  मरसियेः- किसी बहादुर के वीरतापूर्वक लड़ते हुए मारे जाने के बाद उसकी याद में लिखे जाने वाले दोहे।

जसवन्त सिंह (1638-78 ई.)

- गजसिंह ने अनारा बेगम के कहने पर अपने छोटे बेटे जसवन्तसिंह को जोधपुर का राजा बनाया तथा बड़े बेटे अमरसिंह को नागौर का राजा बनाया।

  अमरसिंह राठौड़
- अमरसिंह राठौड़ को कटार का धनी कहा जाता हैं। इसने शाहजहाँ के दरबार में उसके सेनापति सलावत खाँ को मार दिया। नागौर में अमरसिंह राठौड़ की 16 खम्भों की छतरी बनी हुई हैं। यह राजस्थान की लोक कहानियाँ तथा लोक नाट्यों का नायक बना।
- धरमत के युद्ध में हारकर वापस आने पर इसकी हाड़ी रानी जसवन्तदे ने किले के दरवाजे बंद कर दिये थे।

Digital Learning Classes

- औरंगजेब ने जसवन्तसिंह को काबुल का गर्वनर बनाकर अफगानिस्तान भेज दिया था। वहीं पर जमरूद का थाना नामक स्थान पर जसवन्तसिंह की मृत्यु हो गई। इसकी मृत्यु पर औरंगजेब ने कहा- 'आज कुफ्र का दरवाजा टूट गया'।
- जसवन्त सिंह की मृत्यु के तुरन्त बाद 1679 ई. में औरंगजेब ने जजिया कर लगा दिया था।
- जसवन्त सिंह के बेटे पृथ्वीसिंह ने शेर के साथ लड़ाई की थी। औरंगजेब ने इसे जहरीली पोशाक देकर मरवा दिया था।
- औरंगजेब ने जसवन्त सिंह की रानियों तथा उसके बेटे अजीत सिंह को दिल्ली में रूप सिंह राठौड की हवेली में नजरबन्द कर दिया।
- **जसवन्त सिंह की पुस्तकेंः**- भाषा भुषण, आनन्द विलास, अपरोक्ष सिद्धान्तसार, प्रबोध चन्द्रोदय
- इसने जोधपुर में 'राई का बाग पैलेस' बनवाया।
- **दरबारी विद्वानः**- मुहणौत नैणसी- 1. नैणसी री ख्यात (राजस्थान की पहली ख्यात) 2. मारवाड़ रा परगना री विगत (मारवाड़ का गजट/राजपत्र एवं जनगणना का उल्लेख मिलता हैं।)
- ऋण ना चुका पाने के कारण नैणसी को गिरफ्तार कर लिया था तथा जेल में ही अपने भाई सुन्दरदास के साथ नैणसी ने आत्महत्या कर ली।
- मुंशी देवी प्रसाद ने मुहणौत नैणसी को राजपूताने का अबुल फजल कहा हैं।

अजीतसिंह

- औरंगजेब ने अजीतसिंह को राजा बनाने से मना कर दिया तथा इन्द्रसिंह (अमरसिंह का पोता) को 36 लाख रुपये के बदले में राजा बना दिया।
- दुर्गादास राठौड़ तथा मुकन्ददास खींची गौरा नामक महिला की सहायता से अजीत को लेकर दिल्ली से जोधपुर आ जाते हैं।
- अजीतसिंह को कालिन्दी गाँव (सिरोही) में जयदेव पुरोहित के घर रखा गया।
- गौरा को मारवाड़ की पन्नाधाय कहा जाता हैं।
- मारवाड़ के राष्ट्रगीत घूंसो में गौरा का नाम लिया जाता था।
- जोधपुर में गौरा की छतरी हैं।
- दुर्गादास राठौड़ तथा मेवाड़ के राजसिंह ने औरंगजेब के बेटे अकबर से विरोध करवा दिया लेकिन औरंगजेब की चालाकी के कारण अकबर को शम्भाजी (दक्षिण भारत) के पास भागना पड़ा।
- अकबर के पुत्र व पुत्री बुलन्दर अख्तर व सफीयतुनिस्सा का पालन-पोषण दुर्गादास राठौड़ ने किया तथा कालान्तर में ईश्वरदास नागर के कहने पर इन्हें औरंगजेब को सौंप दिया था।
- औरंगजेब की मृत्यु (1707 ई.) के बाद 1708 ई में अजीतसिंह राजा बना।
- अजीतसिंह को राजा बनाने के लिए मारवाड़ के राठौड़ो ने दुर्गादास के नेतृत्व में 30 वर्ष प्रयास किए इसे राठौड़ों का 30 वर्षीय संघर्ष कहा जाता हैं।
- अजीतसिंह ने दुर्गादास राठौड़ को देश निकाला दे दिया था।
- अजीतसिंह ने अपनी बेटी इन्द्रकंवर की शादी मुगल बादशाह फर्रुशसियर के साथ की। ये अन्तिम हिन्दु राजकुमारी थी जिसकी शादी किसी मुगल बादशाह के साथ की गई थी।
- अजीतसिंह की हत्या उसके बेटे बख्तसिंह ने कर दी थी।
- अजीतसिंह की चिता में कुछ जानवर स्वयं जल कर मर गये थे।

दुर्गादास राठौड़

- पिता- आसकरण

V2 Digital Learning Classes

- जन्म स्थान- सालवा (जोधपुर)
- इनके पिता ने इन्हें लूणेवा की जागीर दी थी।
- जोधपुर से निकाले जाने के बाद दुर्गादास मेवाड़ चला गया तथा मेवाड़ के राजा अमरसिंह द्वितीय ने इसे रामपुरा व विजयपुर की जागीरें दी।
- दुर्गादास की छतरी क्षिप्रा नदी (उज्जैन में) के किनारे बनी हुई हैं।
- **उपनाम**:- 1. जेम्स टॉड- राठौड़ों का यूलीसेज 2. मारवाड़ का अणबिन्धिया मोती 3. राजपूताने का गैरीबाल्डी

अभयसिंह

- खेजड़ली घटना- विक्रमी संवत् 1787, भाद्रपद शुक्ल दशमी को अमृता देवी विश्नोई के नेतृत्व में 363 महिला-पुरुषों ने पेड़ों को बचाने के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया था।
- अमृता देवी विश्नोई पुरस्कार
- **दरबारी विद्वान**:- करणीदान - सूरज प्रकाश (बिडद सिणगार), वीरभाण - राजरूपक। इन दोनों पुस्तकों में अभयसिंह के अहमदाबाद अभियान का वर्णन है।

मानसिंह

- जालौर आक्रमण के समय देवनाथ ने मानसिंह के राजा बनने की भविष्यवाणी की।
- मानसिंह को मारवाड़ का सन्यासी राजा कहा जाता हैं। इसने नाथ सम्प्रदाय का सबसे बड़ा मन्दिर महामन्दिर बनवाया। नाथ चरित्र नामक पुस्तक लिखी।
- मेहरानगढ़ किले में मान पुस्तकालय बनवाया। 1818 ई. में अंग्रेजों के साथ संधि कर ली।
- **दरबारी विद्वान**:- कविराजा बांकीदास- बांकीदास री ख्यात, कुकवि बत्तीसी, दातार बावनी, मान जसो मण्डन

  बांकीदास जी ने अंग्रेजों का साथ देने वाले राजाओं की निन्दा की थी।

Digital Learning Classes

बीकानेर के राठौड़ों का इतिहास

- **बीकाः–** अपने काका कांधल की सहायता से 1465 ई. में बीकानेर क्षेत्र में नये राठौड़ राज्य की स्थापना की। 1488 ई. में बीकानेर नगर की स्थापना अक्षय तृतीया (आखा तीज़) वैशाख शुक्ल तृतीया को हुई। आखा तीज़ पर बीकानेर में पतंगें उड़ाई जाती हैं। बीकानेर की स्थापना करणी माता के आर्शीवाद से की गई थी इसलिए करणी माता बीकानेर के राठौड़ों की ईष्ट देवी है।
- **लूणकरणः–** इसने जैसलमेर के राजा जैतसी को हराया था। बीठू सुजा ने लूणकरण को कलियुग का कर्ण कहा है।
- **जैतसीः–** 1534 ई. में हुमायूं के भाई कामरान को रातीघाटी के युद्ध में हराया। इस युद्ध की जानकारी बीठू सुजा की पुस्तक राव जैतसी रो छन्द से मिलती हैं।
- **रायसिंहः–** राजतिलक के समय अकबर ने इसे 4000 का मनसबदार बनाया जिसे कालान्तर में बढ़ाकर 5000 कर दिया था। 1577 ई में अकबर ने इसे 51 परगनें दिए थे। खुसरो के विद्रोह के समय जहाँगीर ने इसे राजधानी आगरा की जिम्मेदारी सौंप दी। बीकानेर में जूनागढ़ किले (1589-94 ई.) का निर्माण करवाया। जूनागढ़ का निर्माण कर्मचन्द की देख-रेख में हुआ। जूनागढ़ में रायसिंह प्रशस्ति लगी हैं जिसका लेखन जइता जैन ने किया था। रायसिंह की पुस्तकेंः- रायसिंह महोत्सव, ज्योतिष रत्नमाला है। दरबारी विद्वान जयसोम है। मुंशी देवी प्रसाद ने रायसिंह को राजपुताने का कर्ण कहा हैं।
- **पृथ्वीराज राठौडः–** रायसिंह का छोटा भाई तथा अकबर का दरबारी लेखक था। अकबर ने इसे गागरौन का किला दिया था। पुस्तक- वेलि क्रिसण रुक्मणी री, उत्तरी राजस्थानी में लिखी गई। दुरसा आदा ने इसे 5 वाँ वेद तथा 19वाँ पुराण कहा। जेम्स टॉड ने इस पुस्तक में 10 हजार घोड़ों का बल बताया। एल. पी. टेस्सीटोरी ने पृथ्वीराज राठौड़ को डिंगल का होरेस कहा हैं।
- **कर्णसिंहः–** उपाधि - जांगलधर बादशाह, पुस्तक - साहित्य कल्पद्रुम।

  विद्वान - गंगाधर मैथिल की पुस्तक 1. कर्णभूषण एवं 2. काव्य डाकिनी
- **अनूपसिंहः–** उपाधि- माही भरातिब। इसकी दक्षिण भारत की जीत से खुश होकर औरंगजेब ने उपाधि दी। इसने बीकानेर में अनूप पुस्तकालय बनवाया। कुम्भा के संगीत ग्रन्थों का संकलन करवाया। विभिन्न संस्कृत पुस्तकों का राजस्थानी में अनुवाद करवाया। जैसे- गीता का अनुवाद आनन्दराम ने किया था। पुस्तकें- अनूप विवेक, काम प्रबोध, श्राद्ध प्रयोग चिन्तामणि। गीत गोविन्द पर अनूपोदय टीका लिखी। बीकानेर में 33 करोड़ देवी-देवताओं का मन्दिर बनवाया।

  दरबारी विद्वानः- भावभट्ट - संगीत अनूप अंकुश, अनूप संगीत रत्नाकर, अनूप संगीत विलास
- **सूरत सिंहः–** 1805 ई. में भटनेर को जीतकर हनुमानगढ़ नाम कर दिया। 1814 ई. में चुरु पर आक्रमण किया। उस समय चुरु के किले से चाँदी के गोले चलाए गए थे। उस समय चुरु का सामन्त श्योजी सिंह था। 1818 ई. में सूरत सिंह ने अंग्रेजों से संधि कर ली थी।
- **रत्न सिंहः–** 1836 ई. में गया में अपने सामन्तों को कन्या वध नहीं करने की कसम दी।

  दरबारी विद्वानः- दयालदास- 'बीकानेर रा राठौड़ा री ख्यात' यह ग्रंथ दो भागों में हैं। एक भाग में जोधपुर के राठौड़ों का इतिहास तथा दूसरे में बीकानेर के राठौड़ों का इतिहास है। जो बीका से लेकर सरदारसिंह तक हैं। यह राजस्थान की अन्तिम ख्यात हैं।

- **गंगा सिंहः–** 1899 ई. में चीन के बॉक्सर विद्रोह को दबाया। इसलिए अंग्रेजों ने केसर-ए-हिन्द की उपाधि दी। 1913 ई. में प्रजा प्रतिनिधि सभा की स्थापना की। 1916 ई. में बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए मदन मोहन मालवीय को सर्वाधिक आर्थिक सहायता दी इसलिए बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय के आजीवन कुलपति थे। 1918 ई. के पेरिस शांति सम्मेलन में भाग लेने वाले भारत के एकमात्र राजा। 1921 ई. में बने चेम्बर्स ऑफ प्रिंसेज (नरेन्द्र मण्डल) के पहले अध्यक्ष थे। 1927 ई. में गंग नहर की स्थापना की। इसलिए गंगासिंह को राजस्थान का भागीरथ कहा जाता है। तीनों गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने वाले राजस्थान के एकमात्र राजा थे। इसकी ऊँटों की सेना गंगा रिसाला कहलाती हैं। गंगा सिंह ने रामदेवरा, देशनोक व गोगामेड़ी के मन्दिरों का वर्तमान स्वरूप दिया था। अपने सिक्कों पर विक्टोरिया इन्प्रेस लिखवाया। (मेवाड़ के स्वरूप सिंह ने अपने सिक्कों पर दोस्ती लंदन लिखवाया।)

चौहानों का इतिहास

चौहानों की उत्पत्तिः–

- **अग्निकुण्ड का सिद्धान्तः–** चन्दबरदाई ने अपनी पुस्तक पृथ्वीराज रासौ में यह सिद्धान्त दिया। कालान्तर में मुहणौत नैणसी तथा सूर्यमल्ल मीसण ने इनका समर्थन किया। इस सिद्धान्त के अनुसार ऋषि वशिष्ठ के आबू यज्ञ के अग्नि कुण्ड से चार राजपूत जातियाँ उत्पन्न की गई- 1. चौहान, चालुक्य, परमार, प्रतिहार। आज के वैज्ञानिक दौर में यह बात अव्यावहारिक लगती हैं। शायद बौद्ध बन चुके प्राचीन क्षत्रियों, आदिवासी जनजातियों, विदेशी आक्रमणकारियों को अग्नि के पास बैठाकर हिन्दु धर्म में दीक्षित किया गया होगा।
- **वत्स गौत्रीय ब्राह्मणः–** 1170 ई. का बिजौलिया शिलालेख जो गुण भद्र द्वारा लिखा गया था, चौहानों को वत्स गौत्रीय ब्राह्मण बताता हैं। यह अभिलेख बिजौलिया के पार्श्वनाथ मन्दिर में लगा हुआ है। इसमें चौहान राजा वासुदेव को सांभर झील का निर्माता बताया गया है। इस अभिलेख में राजस्थान के विभिन्न नगरों के प्राचीन नाम मिलते हैं।
- जेम्स टॉड, विलियम क्रुक के अनुसार चौहान विदेशी जाति के थे।
- आबू शिलालेख, हाँसी शिलालेख (हरियाणा) में चौहानों को चन्द्रवंशी बताया गया हैं।
- जनायक- पृथ्वीराज विजय, इतिहासकार- गोरीशंकर हीराचन्द ओझा (सूर्यवंशी)

उद्गम स्थलः–

- इनका प्रारम्भिक स्थान सपादलक्ष (सांभर क्षेत्र) था। इनकी राजधानी अहिछत्रपुर थी। (नागौर)
- **वासुदेव (551 ई.)ः–** 551 ई में चौहान राज्य की स्थापना की।
- **गूवकः–** पहला स्वतंत्र चौहान राजा। इससे पहले चौहान प्रतिहारों के सामन्त थे।
- **चन्दराजः–** इसकी रानी का नाम- आत्मप्रभा (रुद्राणी) भगवान शिव की भक्त थी तथा पुष्कर झील में दीपक जलाकर पूजा करती थी। यौगिक क्रिया में निपुण थी।
- **अजयराजः–** 1113 ई. में अजमेर की स्थापना की तथा यहाँ पर किला बनवाया। इसने अपनी रानी सोमलेखा के नाम के सिक्के चलवाये थे।
- **अर्णोराजः–** अजमेर में आनासागर झील का निर्माण करवाया। पुष्कर में वराह मन्दिर का निर्माण करवाया।
- **विग्रहराज चतुर्थ (1153-63 ई.)ः–** इसने ढिल्लिका के तोमर राजाओं को हराकर उस पर अधिकार कर लिया। इसने दिल्ली शिवालेख स्तम्भ लगवाया था। इसने गजनी के राजा खुसरो शाह को हराया। इसने बीसलपुर नगर की स्थापना की थी तथा यहाँ पर एक तालाब तथा शिव मन्दिर बनवाया। अजमेर में एक संस्कृत पाठशाला का निर्माण करवाया। इसने खुद के लिखे नाटक हरिकेली की पंक्तियाँ पाठशाला की दीवारों पर खुदवाई। कुतुबुद्दीन ऐबक ने इस पाठशाला को अढ़ाई दिन के झोपड़े में

Digital Learning Classes

बदल दिया। उपाधिः- बीसलदेव, कवि बन्धु। दरबारी विद्वानः- सोमदेव- ललित विग्रहराज। विग्रहराज चतुर्थ का काल अजमेर के चौहानों का स्वर्णकाल कहलाता हैं। नरपति नाल्ह- बीसलदेव रासौ। यह पुस्तक गौडवाडी भाषा में लिखी गई हैं। गौडवाडी मारवाड़ी की उपबोली हैं जो बाली (पाली) से आहोर (जालौर) तक बोली जाती हैं।

- **पृथ्वीराज तृतीय/पृथ्वीराज चौहान (1177-92 ई.):–** पिता- सोमेश्वर, माता- कर्पूरी देवी। ये छोटी उम्र में राजा बना, इसलिए इसकी माता कर्पूरी देवी संरक्षिका बनी। इसने अपने चचेरे भाई नागार्जुन के विद्रोह को दबाया। हिसार तथा गुड़गांव/गुरुग्राम क्षेत्र में रहने वाली भण्डानक जनजाति के विद्रोह को दबाता हैं। महोबा/तुमुल का युद्ध- 1182 ई. (म.प्र.)। पृथ्वीराज एवं परमार्दिदेव चन्देल (महोबा) के बीच हुआ जिसमें पृथ्वीराज जीत गया तथा युद्ध में आल्हा, ऊदल मारे गये। 1187 ई. में गुजरात के चालुक्य राजा भीम द्वितीय पर आक्रमण किया लेकिन दोनों के बीच संधि हो गई।

  चौहान - गहड़वाल विवाद

  (पृथ्वीराज) (जयचन्द)

  विवाद के कारणः- 1. दिल्ली पर अधिकार की लड़ाई 2. पृथ्वीराज द्वारा संयोगिता (जयचन्द की बेटी) का अपहरण
- **तराईन का प्रथम युद्ध 1191 ई.:-** पृथ्वीराज एवं गौरी के बीच हुआ जिसमें पृथ्वीराज विजयी हुआ। युद्ध का कारण- गौरी द्वारा तबर हिन्द (भटिण्डा) पर अधिकार करना रहा। पृथ्वीराज का सेनापति चामुण्डराय था।
- **तराईन का द्वितीय युद्ध 1192 ई.:-** पृथ्वीराज चौहान हार गया, उसे सिरसा के पास पकड़ लिया गया तथा मार दिया गया।

तराईन के युद्ध में पृथ्वीराज की हार के कारणः-

1. इसने युद्धों के द्वारा अपने आसपास के पड़ोसियों को दुश्मन बना लिया था। इससे अपने विदेशी शत्रु की तरफ ध्यान नहीं दे पाया तथा न ही विदेशी शत्रु के खिलाफ पड़ोसियों से सहयोग ले पाया।
2. तराईन के दूसरे युद्ध में इसकी सेना गौरी की तुलना में कम थी तथा इसके अधिकतर सेनापति दूसरे युद्धों में उलझे हुए थे।
3. पृथ्वीराज चौहान की तुलना में गौरी एक अच्छा सेनापति सिद्ध हुआ तथा उसने अपनी चालाकी से पृथ्वीराज चौहान को मात दे दी।
4. पृथ्वीराज चौहान की भोग-विलास की प्रवृत्ति के कारण वह गौरी पर पूर्णतया ध्यान नहीं दे पाया।

पृथ्वीराज चौहान पर अपरिपक्व सेनाध्यक्ष तथा अदूरदर्शी राजनीतिज्ञ होने का आरोप लगाया जाता हैं लेकिन इन आरोपों से उसे मुक्त किया जा सकता हैं क्योंकि तराईन के दूसरे युद्ध से पहले वह किसी भी युद्ध में नहीं हारा था। वह अपनी युग की सीमाओं में बंधा हुआ एक राजा था। शत्रु के साथ धोखा नहीं करना, माफी मांग लेने पर शत्रु को छोड़ देना, शत्रु की भागती हुई सेना का पीछा नहीं करना, उस युग की हिन्दु संस्कृति के नियम थे तथा पृथ्वीराज चौहान भी इन्हीं नियमों का पालन कर रहा था।

हालांकि उसकी हार ने भारत की गुलामी का मार्ग प्रशस्त कर दिया लेकिन फिर भी तात्कालिक भारत के इतिहास में उसके महत्व से इंकार नहीं किया जा सकता है। निःसन्देह वह दिल्ली का अन्तिम हिन्दु राजा था।

- **भारतीय इतिहास में तराईन के युद्ध का महत्वः–**

1. भारत पर विदेशी अधिकार का जो सिलसिला तराईन से शुरु हुआ वह 1947 ई तक जारी रहा।
2. पृथ्वीराज चौहान की हार से गौरी तथा उसके उत्तराधिकारियों के लिए भारत में राज करना आसान हो गया।
3. राजपूतों की उभरती हुई महत्वाकांक्षा पर रोक लग गई तथा पृथ्वीराज के बाद कोई भी राजपूत राजा दिल्ली पर अधिकार नहीं कर पाया।
4. मुस्लिम शासन/राज्य की स्थापना से भारतीय संस्कृति पर सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रभाव पड़े। नकारात्मक प्रभाव के तहत् हिन्दु व बुद्ध मन्दिरों, स्मारकों आदि को तोड़ा गया तथा हम देखते हैं कि 12 वीं शताब्दी के बाद भारत से बुद्ध संस्कृति लगभग समाप्त हो गई। सकारात्मक प्रभाव के तहत हिन्दु-मुस्लिम साझी संस्कृति का उदय हुआ जिसके प्रभाव स्थापत्य कला, चित्रकला आदि विभिन्न रूपों में देखे गये। सूफी व भक्ति आन्दोलन के कारण भारत में सहिष्णुता का

वातावरण तैयार हुआ।

- **पृथ्वीराज चौहान की सांस्कृतिक उपलब्धियाँः–** 1. विग्रौरा गढ़ का किला- दिल्ली के पास पहली दिल्ली
  दरबारी विद्वानः- 1. चन्दबरदाई (पृथ्वी भट्ट)- पृथ्वीराज रासौ, 2. जयानक - पृथ्वीराज विजय, 3. जनार्दन, 4. वागीश्वर, 5. विद्यापति गौड़
  इसने कला एवं संस्कृति विभाग की स्थापना की थी जिसका मंत्री पद्मनाथ था। प्रमुख मंत्री- कैमास एवं भुवनमल्ल थे। उपाधियाँ- राय विथौरा एवं दल-पुंगल।

रणथम्भौर के चौहानों का इतिहास

- पृथ्वीराज के बेटे गोविन्द राज ने 1194 ई. में रणथम्भौर में एक नए चौहान राज्य की स्थापना की।

हम्मीर (1282-1301 ई.)

- 1292 ई में जलालुद्दीन खिलजी के हमले को विफल किया। इस विफलता पर खिलजी ने कहा था- 'ऐसे 10 किलों को मैं मुसलमान के एक बाल के बराबर नहीं समझता'।
- 1301 ई में A.K. का आक्रमण
  कारण- A.K. के विद्रोही मुहम्मद शाह व केहब्रु को हम्मीर द्वारा शरण देना।
- राजस्थान का पहला साकार रणथम्भौर में किया गया। हम्मीर की रानी रंगदेवी ने जौहर किया। हम्मीर की बेटी देवलदे जौहर से एक दिन पहले पद्म तालाब में कूद कर आत्महत्या कर लेती हैं। (जल जौहर) हम्मीर के विश्वासघाती- रणमल एवं रतिपाल।
- सांस्कृतिक उपलब्धियाँः- हम्मीर ने पण्डित पुरोहित विश्वरूप से कोटि यज्ञ करवाया था।
- संगीत पुस्तक- श्रृंगार हार
- पिता जैत्रसिंह की याद में 32 खम्भों की छतरी (रणथम्भौर में)
- दरबारी विद्वानः बीजा दित्य
- हम्मीर ने अपने जीवन में 17 युद्ध लड़े थे जिनमें 16 युद्धों में विजयी रहा।
- हम्मीर को हठ करने वाले तथा शरण देने वाले राजा के रूप में याद किया जाता है।
- हम्मीर पर अत्यधिक कर लगाने तथा अपने हठ के लिए युद्ध करने का आरोप लगाया जाता हैं लेकिन इन आरोपों में सच्चाई नहीं है। अलाउद्दीन से युद्ध करने के लिए उसे अधिक धन की आवश्यकता थी इसलिए उस समय कर बढ़ाये गये, इससे पहले कभी ऐसा नहीं देखा गया। शरणागत की रक्षा करना उस समय की हिन्दु संस्कृति का आदर्श था तथा वह अपने उन्हीं आदर्शों का पालन कर रहा था। उसकी शूरवीरता तथा शरणागत की रक्षा के लिए अपना सब कुछ बलिदान कर देना अपने आप में इतिहास की एक आश्चर्यजनक घटना हैं। जो निश्चित ही उसे प्रथम पंक्ति में लाकर खड़ा कर देती हैं।
  किसी कवि ने हम्मीर के बारे में सत्य ही कहा हैं-

  'सिंह गमन, सत्पुरुष वचन, कदली फलै इक बार
  तिरिया तेल, हम्मीर हठ, चढ़ै न दूजी बार।'

जालौर के चौहानों का इतिहास

- ऋषि जाबालि की तपोभूमि-जाबालिपुर (प्राचीनकाल जालौर)– चौहानों की सोनगरा शाखा
  जालौर का किला- सुवर्णगिरी किला
- जैसलमेर का किला- स्वर्णगिरी

कीर्तिपाल सोनगरा

- 1182 ई में सोनगरा शाखा का शासन प्रारम्भ। चित्तौड़ के राजा सामन्त सिंह को हराकर चित्तौड़ पर भी अधिकार कर लिया था।
  नैणसी री ख्यात- कीतू एक महान राजा।

कान्हड़देव

- सिवाणा का पहला शाका- 1308 ई.।
- ए. के. ने आक्रमण किया। सातल व सोम के नेतृत्व में साका किया गया। सातल व सोम कान्हड़देव के भतीजे। एक भायल सैनिक ने विश्वासघात किया था। ए. के. ने सिवाणा का नाम बदलकर खैराबाद कर दिया।
- सिवाणा- जालौर की कुंजी
- जालौर का शाका- 1311 ई
- ए. के. ने आक्रमण किया। कान्हड़देव व वीरमदेव लड़ते हुए मारे गए। बीका दहिया ने विश्वासघात किया था। बीका दहिया को उसकी पत्नी ने मार दिया। ए. के. ने जालौर का नाम जलालाबाद कर दिया।
- फिरोजा- ए.के. की पुत्री, वीरमदेव की प्रेमिका
- गुल विहिश्त- फिरोजा की धाय माँ
- कमालुद्दीन गुर्ग- ए. के. का सेनापति

Digital Learning Classes

सिरोही के देवड़ा चौहानों का इतिहास

- **लुम्बाः–** 1311 ई. में आबू व चन्द्रावती जीता तथा देवड़ा राज्य स्थापित किया। राजधानी-चन्द्रावती
- **सहसमलः–** 1425 ई. में सिरोही की स्थापना कर उसे अपनी राजधानी बनाया।
- **सुरताणः–** दत्ताणी का युद्ध 1583 ई. में अकबर के खिलाफ प्रताप का छोटा भाई जगमाल ने अकबर की तरफ से लड़ा था।
  दुरसा आढ़ा- राव सुरताण रा कवित।
- **बैरीसालः–** अजीतसिंह को कान्द्रिी (सिरोही) गांव में शरण दी।
- **शिवसिंहः–** 1823 ई में अंग्रेजों से संधि। अंग्रेजों से संधि करने वाली अन्तिम रियासत।

बूँदी के हाड़ा चौहानों का इतिहास

- बूँदी में पहले मीणा शासकों का अधिकार था। बून्दा मीणा के कारण बूँदी नाम पड़ा।
- **देवा** (1241 ई.):– जैता मीणा को हराकर बूँदी पर अधिकार।
- **जैत्रसिंह** (1274 ई.):– कोटा जीतकर बूँदी में मिलाया।
- **बरसिंह** (1354 ई.):– तारागढ़ किला (बूँदी) बनवाया। भीत्ति चित्र के लिए प्रसिद्ध है।
- **सुरजन सिंह** (1569 ई.):– अकबर की अधीनता स्वीकार की। आमेर के भगवन्तदास की अधीनता स्वीकार कराने में मुख्य भूमिका थी।

  द्वारिका- रणछौड़ जी का मन्दिर

  दरबारी विद्वान- चन्द्रशेखर 1. सुरजन चरित्र एवं 2. हम्मीर हठ
- **बुधसिंहः**– दलेल सिंह एवं उम्मेद सिंह

  रानी अमर कंवर (सवाई जयसिंह की बहन उम्मेद सिंह के पक्ष में मराठों को बुलाती हैं।)

  यह मराठों का राजस्थान की आन्तरिक राजनीति में पहला हस्तक्षेप था। सवाई जयसिंह ने दलेलसिंह का पक्ष लिया तथा अपनी बेटी कृष्णा कंवर की शादी इसके साथ की थी।

  बुधसिंह की पुस्तक- नेहतरंग
- **विष्णुसिंह** (1818 ई.):– अंग्रेजों से संधि।

कोटा के हाड़ा चौहानों का इतिहास

- **माधोसिंहः**– बूँदी के राजा रतनसिंह का बेटा। 1631 ई. में मुगल बादशाह शाहजहाँ ने इसे कोटा का स्वतंत्र राज्य बना दिया।
- **मुकुन्द सिंहः**– धरमत के युद्ध में लड़ता हुआ मारा गया। कोटा में अबली मीणी का महल बनवाया।
- **भीमसिंहः**– इस पर वल्लभ सम्प्रदाय का प्रभाव था। इसलिए कोटा का नाम नन्दग्राम कर दिया। बारां में सांवरिया जी का मन्दिर बनवाया। इसने मुगल बादशाह फर्रूखसियर के कहने पर बूँदी के राजा बुधसिंह को हरा दिया तथा बूँदी का नाम फर्रूखाबाद कर दिया।
- **उम्मेदसिंहः**– 1817 ई. में अंग्रेजों से संधि।

  संधि की शर्तेः– उम्मेद सिंह एवं उसके वंशज कोटा के राजा बने रहेगें। जालिम सिंह झाला व उसके वंशज कोटा के दीवान बने रहेगें तथा सारी शक्तियाँ उनके पास रहेगी। (पूरक संधि)
- **किशोर सिंह द्वितीयः**– मांगरोल का युद्ध 1821 ई. में किशोर सिंह एवं जालिम सिंह झाला के मध्य। कर्नल जेम्स टॉड इस युद्ध में जालिम सिंह की तरफ से लड़ा।

झालावाड़ का इतिहास (झाला वंश)

- **मदन सिंह झालाः–** जालिम सिंह झाला का पोता। 1837 ई. में कोटा से अलग होकर झाला राज्य की स्थापना की। 1838 ई. में अंग्रेजों ने इस राज्य को मान्यता दे दी। इस प्रकार झालावाड़ राजस्थान की सबसे नई रियासत थी। झालावाड़ की राजधानी झालरापाटन (घन्टियों का शहर) वसुन्धरा।
- **राजेन्द्र सिंह** ने झालावाड़ राज्य के मन्दिर हरिजनों के लिए खुलवा दिए थे। काष्ठ प्रासाद बनवाया।

आमेर का इतिहास (कछवाहा वंश)

- कुश- राम का छोटा बेटा
  कुश– कुशवाहा– कच्छवाहा कुश के वंशज
  इसी कारण इसे रघुवंश तिलक भी कहा जाता हैं।
- **दुल्हरायः–** वास्तविक नामः तेजकरण
  1137 ई. में नरवर से दौसा– बड़गुर्जरों को हराकर दौसा पर अधिकार
  रामगढ़ के मीणा शासकों को हराकर अधिकार कर दिया तथा कुल देवी जमवाय माता का मन्दिर बनवाया।
- **कोकिलदेवः–** 1207 ई. में आमेर के मीणा शासकों को हराकर अधिकार कर लेता हैं।
- **भारमलः–** 1562 ई. में पुत्री हरखा बाई– सांभर– अकबर
  अकबर ने हरखाबाई को मरियम उज्जमानी की उपाधि दी तथा सलीम (जहाँगीर) इसी का बेटा था।
  मुगलों की अधीनता स्वीकार करने वाला, मुगलों से वैवाहिक संबंध स्थापित करने वाला राजस्थान का पहला राजा था।
- **भगवन्त दासः–** सरनाल (गुजरात) के मिर्जा विद्रोह को दबाया। इसलिए अकबर ने नगाड़ा व परचम देकर सम्मान किया। बेटी मानबाई की शादी सलीम (जहाँगीर) के साथ की। जहाँगीर ने मानबाई को शाहे-बेगम की उपाधि दी। जहाँगीर के बेटे का नाम खुसरो था। जहाँगीर की शराब की आदतों से तंग आकर मानबाई ने आत्महत्या कर ली।
- **मानसिंह (14 फरवरी, 1590):–** 1590 ई में अकबर ने राजतिलक के समय 5000 का मनसबदार बनाया जिसे बाद में बढ़ाकर 7000 कर दिया। यह किसी भी हिन्दु राजा को मिलने वाला सबसे बड़ा मनसब था। अकबर ने इसे काबुल, बंगाल व बिहार का सूबेदार बनाया था। बिहार में मानपुर नामक शहर बसाया। बंगाल में अकबर नगर बाया जिसका वर्तमान मान राजमहल हैं। पूर्वी बंगाल के राजा केदार को हराया, यहाँ से शिला माता की मूर्ति लेकर आया तथा आमेर के महलों में लगवाया। शिला माता- ईष्ट देवी (आमेर कच्छवाहा)। आमेर के महलों का निर्माण करवाया। वृन्दावन में राधा गोविन्द का मन्दिर बनवाया। इसकी रानी कनकावती ने अपने बेटे जगतसिंह की याद में आमेर में जगत शिरोमणि मन्दिर बनवाया। इस मन्दिर में भगवान कृष्ण की वही मूर्ति हैं, जिसकी पूजा मीरा बाई चित्तौड़ में करती थी।
  दरबारी विद्वानः- पुण्डरीक विट्ठलः- राग माला, राग मंजरी, राग चन्द्रोदय, नर्तन निर्णय
  अकबर ने उपाधियाँ दी- फर्जन्द, मिर्जा राजा

- **मिर्जा राजा जयसिंह (1621-67 ई.):–** कछवाहा शासकों में सबसे लम्बा शासनकाल। शाहजहाँ ने इसे मिर्जा की उपाधि दी। औरंगजेब ने इसे शिवाजी को नियंत्रित करने दक्षिण भारत में भेजा। 1665 ई. में पुरन्दर की संधि- शिवाजी व मिर्जा जयसिंह के बीच। जयगढ़ किले का निर्माण जिसे पहले चील का टोला कहा जाता था। हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक बिहारी जी इनके दरबार में थे। बिहारी सतसई लिखी। कुलपति मिश्रः- बिहारी जी के भाणजे थे। इन्होंने 52 ग्रन्थ लिखे थे जिनमें मिर्जा राजा जयसिंह के दक्षिण अभियानों की जानकारी मिलती हैं।
- **सवाई जयसिंह (1700-43 ई.):–** सात मुगल बादशाहों के साथ काम किया। औरंगजेब की मृत्यु के बाद हुए उत्तराधिकार संघर्ष में इसने आजम का पक्ष लिया था। लेकिन मुअज्जम बहादुर शाह प्रथम के नाम से भारत का मुगल बादशाह बना। इसने आमेर पर आक्रमण किया तथा जयसिंह को हटाकर इसके छोटे भाई विजयसिंह को राजा बना दिया। आमेर का नाम बदलकर मोमिनाबाद/इस्लामाबाद कर दिया। सवाई जयसिंह तीन बार मालवा का सबेदार बना था। मुगलों की तरफ से 1741 ई. में मराठा पेशवा बालाजी बाजीराव के साथ धौलपुर समझौता किया। मराठों के खिलाफ सवाई जयसिंह ने पीलसुद (म.प्र.), मन्दसौर (म.प्र.) एवं रायपुरा (कोटा) युद्ध किये। 1741 ई में गंगवाना का युद्ध जोधपुर के अभयसिंह के खिलाफ बीकानेर के जोरावर सिंह का साथ दिया। इसने अश्वमेध यज्ञ का आयोजन करवाया। अन्तिम हिन्दु राजा जिसने अश्वमेध यज्ञ करवाया जिसके पुरोहित पुण्डरीक रत्नाकर थे। दीपसिंह कुम्बानी ने यज्ञ का घोड़ा पकड़ा तथा अपने 25 साथियों के साथ लड़ता हुआ मारा गया।

सांस्कृतिक उपलब्धियाँः-

1. 18 नवम्बर, 1727 को जयपुर की स्थापना की। इसके वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य थे। पुर्तगाली ज्योतिषी जेवियर दी सितवा की मदद ली गई। जयपुर भारत का पहला आधुनिक शहर था।
2. देश में पाँच स्थानों पर जंतर-मंतर बनवाये। 1. दिल्ली (सबसे पहले), 2. जयपुर (सबसे बड़ा)- विश्व विरासत में शामिल राजस्थान की पहली इमारत, 3. उज्जैन, 4. मथुरा एवं 5. बनारस
3. जन्तर-मन्तर में सम्राट यन्त्र रखा गया जो विश्व की सबसे बड़ी सौर घड़ी है।
4. नाहरगढ़ का निर्माण करवाया, इसका पूरा नाम सुदर्शनगढ़ था।
5. सिटी पैलेस (चन्द्रमहल) का निर्माण करवाया।
6. जल महल (मानसागर झील)
7. गोविन्द देव जी का मन्दिर - यह गौडीय सम्प्रदाय का सबसे प्रमुख मन्दिर हैं। जयपुर के राजा स्वयं को गोविन्द देवजी का दीवान मानते थे।
8. जयगढ़ किले में जयबाण तोप रखवाई थी।
9. जयसिंह ने कारिका नामक ज्योतिष ग्रंथ लिखा।
10. जीज मुहम्मद शाही नाम से नक्षत्र सारणी लिखवाई।
11. मुफ्लिड ज्यामिति का पंडित जगन्नाथ ने संस्कृत अनुवाद किया। सिद्धान्त कोस्तुभ एवं सिद्धान्त सम्राट
12. पुण्डीरिक रत्नाकर की पुस्तक- जयसिंह कल्पद्रम
13. मुहम्मद मेहरो व मुहम्मद शरीफ को विदेशों से पुस्तकें लाने के लिए भेजा।
14. चित्रकला विकास के लिए सूरतखाना की स्थापना की।
15. सती-प्रथा पर रोक लगाने की कोशिश की।
16. अंतर-जातीय विवाह को प्रोत्साहन दिया था।
17. जयपुर में पेयजल के लिए हरमाड़ा से एक नहर ले आया।
18. ब्राह्मणों का भेदभाव समाप्त किया तथा यज्ञ में एक साथ बैठाया।

Digital Learning Classes

19. साधु-सन्यासियों को मथुरा के पास एक गाँव के बना कर दिया जिससे वे एक नियमित जीवनशैली जी सकें।

- **ईश्वरी सिंहः–** राजमहल का युद्ध 1747 ई में ईश्वरीसिंह एवं माधोसिंह के बीच हुआ। इसमें ईश्वरी सिंह की तरफ से सूरजमल तथा माधोसिंह की तरफ से जगतसिंह द्वितीय (मेवाड़), उम्मेदसिंह (बूँदी), दुर्जनसाल (कोटा) एवं मराठे थे। इस युद्ध में ईश्वरी सिंह जीत गया तथा इसकी याद में ईसरलाट का निर्माण करवाया।

  बगरू युद्ध 1748 ई. में ईश्वरी सिंह एवं माधोसिंह के बीच हुआ। माधोसिंह को टोंक क्षेत्र के 5 परगने मिले। उम्मेदसिंह को बूँदी का राजा मान लिया गया। ईश्वरी सिंह पर युद्ध हर्जाना लगाया गया। मराठों द्वारा युद्ध से तंग आने पर आत्महत्या कर लेता हैं।

- **माधोसिंह प्रथमः–** 1751 ई. में मराठों का कत्ले आम करवाया। 1759 ई. में काकोड़ युद्ध (टोंक) में पुनः हराया। 1761 ई. में भटवाड़ा के युद्ध में कोटा के राजा शत्रुसाल से हारा। इस युद्ध में कोटा का सेनापति जालिम सिंह झाला था। यह युद्ध रणथम्भौर के किले के अधिकार के लिए हुआ था। 1763 ई में सवाईमाधोपुर की स्थापना की। चाकसू में शीतला माता का मन्दिर बनवाया। मोती डूँगरी के महल बनवाये।

- **प्रताप सिंह (1778-1803 ई.):–** तुँगा का युद्ध 1787 ई. में प्रतापसिंह+विजयसिंह (जोधपुर) एवं मराठा (महादजी सिंधिया) के बीच। इसमें मराठे हार गये थे। मराठों ने विजयसिंह से युद्ध हर्जाना माँगा। विजयसिंह ने मराठा सेनापति जयप्पा सिंधिया की हत्या कर दी। इस हत्या के बदले में विजयसिंह ने मराठों को अजमेर का तारागढ़ किला दिया। विजयसिंह की प्रेमिका गुलाबराय को जोधपुर की नूरजहां कहा हैं। मालपुरा युद्ध 1800 ई. में प्रताप सिंह+ भीमसिंह एवं मराठा के बीच हुआ।

  सांस्कृतिक उपलब्धियाँः–

  1. हवामल की स्थापना 1789 ई. में हुई। वास्तुकार लालचन्द उस्ता थे। पांच मंजिला इमारत है जो भगवान श्री कृष्ण के मुकुट के समान हैं। पांच मंजिला में 1. शरद मन्दिर, 2. रतन मन्दिर, 3. विचित्र मन्दिर, 4. प्रकाश मन्दिर एवं 5 हवा मन्दिर है। हवामहल में 953 झरोखे बने हुए हैं।
  2. प्रतापसिंह ब्रजनिधि नाम से कविता लिखता था।
  3. काव्य गुरु- गणपति भारती एवं संगीत गुरु- चाँद खाँ थे।
  4. प्रतापसिंह ने जयपुर में संगीत सम्मेलन का आयोजन करवाया। अध्यक्ष देवर्षि बृजपाल भट्ट थे। इस सम्मेलन में राधा गोविन्द संगीत सार ग्रन्थ लिखा गया।
  5. जयपुर में तमाशा लोक नाट्य प्रतापसिंह के समय लोकप्रिय रहा। इसके लिए बंशीधर भट्ट को महाराष्ट्र से लेकर आये थे।
  6. प्रतापसिंह का समय जयपुर चित्रकला का समय स्वर्णकाल था।
  7. लालचन्द नामक चित्रकार पशुओं की लड़ाई का चित्र बनाता था।
  8. इसके दरबार में 22 विद्वान रहते थे जिसे गन्धर्व बाईसी/प्रताप बाईसी कहा जाता हैं। इन बाईस विद्वानों के लिए गुणी-जनखाना बनवाया।

- **जगतसिंहः–** इसकी प्रेमिका रसकपुर उसके शासन कार्यों में हस्तक्षेप करती थी। 1818 ई में संधि अंग्रेजों के साथ की।

- **रामसिंह (1835-80 ई.):–** छोटी उम्र में राजा बना इसलिए जॉन लूडलों को प्रशासक बनवाया। जॉन लूडलो ने सती प्रथा, कन्या वध, समाधि प्रथा, मानव व्यापार पर रोक लगाई। रामसिंह ने 1857 क्रांति में अंग्रेजों का साथ दिया, इसलिए अंग्रेजों ने सितार-ए-हिन्द की उपाधि दी तथा कोटपूतली परगना दिया। कला के विकास के लिए मदरसा-ए-हुनरी की स्थापना की जिसे वर्तमान में इसे राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स एण्ड क्रॉफ्ट कहा जाता हैं। 1866 ई. में कांतिचन्द्र मुखर्जी ने बालिका विद्यालय खोला जो किसी भी रियासत में पहला बालिका विद्यालय था। जयपुर में गुलाबी रंग करवाया। जयपुर की नींव 1876 ई. में प्रिंस अल्बर्ट ने रखी। वास्तुकार- स्टीवन जैकब थे। महाराजा कॉलेज तथा संस्कृत कॉलेज की स्थापना की। ब्लू पॉटरी इसी के समय जयपुर में प्रसिद्ध हुई।

- **माधोसिंह द्वितीयः–** इसे बब्बर का शेर कहा जाता हैं। मदन मोहन मालवीय को भारतीय हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए 5 लाख रुपये दिये थे। नाहरगढ़ में अपनी 9 दासियों के लिए 9 एक जैसे महल बनवाये। 1904 में जयपुर में डाक व्यवस्था (राजस्थान में सबसे पहले जयपुर में) शुरु करवाई। सिटी पैलेस में मुबारक महल बनवाया, 2014 में मुबारक महल जल गया।
- **मानसिंह द्वितीयः–** राजस्थान के पहले अन्तिम राजप्रमुख
- **गायत्री देवीः–** राजस्थान की पहली महिला लोकसभा सदस्य। आत्मकथाः- द प्रिंजेज रिमेम्बर्स।

अलवर का इतिहास

- अलवर में कच्छवाह वंश के नरूख शाखा का राज था।
- मिर्जा राजा जयसिंह ने कल्याणसिंह को नरुका को माचेड़ी की जागीर दी।
- **प्रतापसिंहः–** माचेड़ी का सामन्त था। 1774 ई. में मुगल बादशाह शाहआलम ने इसे स्वतंत्र राजा घोषित किया। 1775 ई में प्रतापसिंह ने अलवर पर अधिकार कर उसे अपनी राजधानी बनाया।
- **विनयसिंहः–** अलवर में 80 खम्भों की मूर्ति बनवाई। इसे मूसी महारानी की छतरी भी कहते हैं। अपनी रानी शीला के लिए सिलीसेढ़ झील का निर्माण करवाया। सिलीसेढ़ जिसे राजस्थान का नन्दन कानन कहा जाता हैं।
- **जयसिंहः–** पहले गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया था। इसने नरेन्द्र मण्डल का नामकरण किया था। इसने अलवर में हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किया। 10 दिसम्बर, 1203 को अलवर में बाल विवाह एवं अनमेल विवाह पर रोक लगा दी। 10 दिसम्बर को शांति पुरस्कार- ओरलो (स्वीडन) में दिया। ड्यूक ऑफ र्गडन वर्ग अलवर आगमन पर सरिस्का का महत्व बनवाया। 1933 ई के बाद तिजारा दंगों के बाद अंग्रेजों ने इसे हटा दिया अतः पेरिस चला गया।
- **तेजसिंहः–** आजादी के समय अलवर का राजा। महात्मा गांधी की हत्या में नाम आया था लेकिन बाद में सुप्रीम कोर्ट ने निर्दोष करार दिया।

जैसलमेर का इतिहास

- जैसलमेर में यदुवंश की भाटी शाखा का शासन था। भाटी भगवान कृष्ण के वंशज हैं। इसलिए जैसलमेर के राजचिह्न में छत्राला यादवपति लिखा जाता हैं।
- **भट्टीः–** 285 ई में भटनेर की स्थापना। इसलिए भाटियों को उत्तर भड किवाड़ कहा जाता हैं।
- **मंगलरावः–** राजधानी- तन्नौट
- **देवराजः–** राजधानी- लोड़वा। मूमल महेन्द्र की प्रेम कहानी में मूमल लोड़वा की राजकुमारी थी तथा महेन्द्र अमरकोट का राजा था।
- **जैसलः–** 1155 ई में जैसलमेर की स्थापना की तथा जैसलमेर का किला बनवाया।
- **मूलराजः–** अलाउद्दीन खिलजी ने आक्रमण किया। इस समय जैसलमेर का प्रथम साका हुआ।
- **दुर्जन सालः–** 1352 ई में फिरोज तुगलक ने आक्रमण किया। इस समय जैसलमेर का दूसरा साका हुआ।
- **लूणकरणः–** उमादे का पिता। 1550 ई में कंधार के समीर अली ने आक्रमण किया। इस समय केसरिया तो किया गया लेकिन जौहर नहीं हुआ इसलिए इसे आधा साका कहा जाता हैं।

- **मूलराज द्वितीयः–** 1818 ई में अंग्रेजों के साथ संधि कर ली।
- **जवाहर सिंहः–** आधुनिक जैसलमेर का निर्माता। जैसलमेर में विण्डन पुस्तकालय बनवाया। क्रांतिकारी सागरमल गोपा को जेल में जिन्दा जलाकर मार दिया था। गोपाजी की हत्या की जांच के लिए गोपालस्वरूप पाठक आयोग बनाया गया। सागरमल गोपा की पुस्तकें:- 1. आजादी के दीवाने, 2. जैसलमेर का गुण्डाराज, 3. रघुनाथ सिंह मुकदमा।

करौली का इतिहास

- करौली में यदुवंश की जादौन शाखा का शासन था।
- **विजयपालः–** 1040 ई में बयाना को राजधानी बनाया तथा जादौन शाखा का प्रारम्भ किया।
- **धर्मपालः–** 1650 ई में करौली को राजधानी बनाया। करौली का पुराना नाम कल्याणपुर है।
- **गोपालपालः–** करौली में मदन मोहन का मन्दिर बनवाया। यह गौदीय सम्प्रदाय का राजस्थान में दूसरा मन्दिर है।
- **हरबन पालः–** 1817 ई में अंग्रेजों के साथ संधि कर लेता है।
- **मदनपालः–** 1857 ई की क्रांति कोटा के राजा रामसिंह द्वितीय की मदद की। इसलिए अंग्रेजो ने इसे 17 तोपों की सलामी दी। 1865 ई दयानन्द सरस्वती पहली बार राजस्थान के करौली में आये थे।

भरतपुर का इतिहास

- राजस्थान में जाट राजवंश की दो रियासतें थी- 1. भरतपुर एवं 2. धौलपुर
- 1669 ई में गोकूला ने मथुरा के आसपास के जाट किसानों को लेकर औरंगजेब से विद्रोह किया लेकिन विद्रोह दबा दिया गया। 1687 ई में सिनसिनी गांव का जमींदार पुनः विद्रोह कर लेता हैं इसने सिकन्दरा में अकबर के मकबरे को लूट लिया तथा उसके हड्डी को जला दिया।
- **चूडामतः–** सवाई जयसिंह की मदद से अपने भाई मोकम सिंह को हराकर राजा बना। सवाई जयसिंह ने इसे डींग की जागीर तथा बृजराज की उपाधि दी। इसने डींग का किला बनवाया था।
- **सूरजमलः–** इसे जाटों का प्लेटो तथा भकलाटून कहा जाता हैं। डीग में जलमहलों का निर्माण करवाया। डीग को जलमहलों की नगरी कहा जाता हैं। भरतपुर में किला बनवाया। दिल्ली पर आक्रमण किया वहां से नूरजहाँ का झूला उठा ले आया तथा डीग के जलमहलों में लगवाया। पानीपत के तीसरे युद्ध से भागते मराठों को शरण दी थी। इसने भरतपुर में कृषि सुधार किये इसके समय भरतपुर राज्य की आय 175 लाख वार्षिक आय थी।

  दरबारी विद्वान- मंगलसिंह पुरोहित- सुजान सम्वत विलास
- **जवाहर सिंहः–** दिल्ली पर आक्रमण किया तथा वहाँ से अष्ठ धातु के दरवाजे उठा के लाए तथा उनको भरतपुर में लगवाया। ये दरवाजा मूल रूप से चित्तौड़गढ़ का था। दिल्ली जीत की याद में भरतपुर किले में जवाहर बुर्ज बनवाई। जहाँ भरतपुर के राजाओं का राज तिलक किया जाता था।
- **रणजीतसिंहः–** दूसरे अंग्रेज मराठा युद्ध के दोरान मराठा सेनापति जसवंत राव होल्कर को शरण दी। अंग्रेज सेनापति लॉर्ड लेक ने इस किले पर पाँच आक्रमण किये लेकिन असफल रहा इसलिए इसे लोहागढ़ कहा जाता है। कालान्तर में रणजीतसिंह ने अंग्रेजों से संधि कर ली।

Digital Learning Classes